


# कहीं मिठाईके नाम पर जहर तो नहीं खा रहे आप

त्योहारों की खुशी दोगुनी करने के लिए हम सभी बर्फी, लड्डू और रसगुल्ले जैसी तरह-तरह की मिठाइयां घर लाते हैं। मगर क्या आप जानते हैं कि इन खास मौकों पर बाजारों में भारी पैमाने पर मिलावटी मिठाइयां बेची जाती हैं, जिन्हें बनाने में साफ-सफाई का बिल्कुल ध्यान नहीं रखा जाता? मुनाफे के चक्कर में दुकानदार मावा का वजन बढ़ाने के लिए उसमें स्टार्च, चावल या गेहूं का आटा, डिटर्जेंट और यहां तक कि यूरिया भी मिला देते हैं। असली घी की जगह वनस्पति, पाम ऑयल, उबले आलू या जानवरों की चर्बी धड़ल्ले से इस्तेमाल होती है। इतना ही नहीं, मिठाइयों पर लगा 99.9प्रतिशत शुद्ध चांदी का वर्क असल में जहरीला एल्युमिनियम फॉयल हो सकता है। इन्हें सुंदर दिखाने के लिए मेटानिल येलो और मैलाकाइट ग्रीन जैसे रंग मिलाए जाते हैं। ये असल में कपड़े रंगने वाले खतरनाक केमिकल हैं जिनसे कैंसर का खतरा रहता है। फूड सेफ्टी विभाग ने मशहूर दुकानों पर छापे मारे। वहां मिठाइयों के पास खुले कूड़ेदान, कीड़े-मकोड़े, बिना हाथ धोए काम करते कर्मचारी मिले और पानी की शुद्धता की जांच रिपोर्ट भी गायब थी। बहुत ज्यादा चमकीले या आंखों को चुभने वाले रंग की मिठाइयां लेने से बचें, क्योंकि इनमें केमिकल वाले रंग हो सकते हैं। चांदी के वर्क की असलियत जानने के लिए उसे उंगलियों के बीच रगड़ें या आग दिखाएं। असली चांदी टूटकर घुल जाती है, जबकि एल्युमिनियम का वर्क वैसा ही रहता है या काला पड़ जाता है। अगर मिठाई से खट्टी, अजीब महक आ रही हो या उसमें फफूंद नजर आए, तो उसे बिल्कुल न खाएं। हमेशा एफएसएसएआईका लाइसेंस देखकर ही मिठाइयां खरीदें और पैकिंग पर बनने व खराब होने की तारीख जरूर पढ़ें। अगर आपको कोई मिठाई मिलावटी लगती है, तो आप नेशनल कंज्यूमर हेल्पलाइन या एफएसएसएआई के फूड सेफ्टी कनेक्ट ऐप पर सीधे शिकायत कर सकते हैं। गंदी या मिलावटी मिठाई खाने से साल्मोनेला, ई. कोलाई या नोरोवायरस जैसे कीटाणु पेट में जा सकते हैं। इसके लक्षण मिठाई खाने के कुछ घंटों से लेकर कुछ दिनों के भीतर शुरू हो सकते हैं। मरीज को पानी जैसे दस्त, पेट में ऐंठन, जी मिचलाना, बार-बार उल्टी आना, बुखार, बदन दर्द, ठंड लगना और भारी कमजोरी जैसी दिक्कतें होती हैं। हालांकि, पर्याप्त आराम करने और शरीर में पानी की कमी न होने देने से हल्के मामले 1 से 3 दिनों के अंदर अपने आप ठीक हो जाते हैं। डॉक्टर के पास जाना कब जरूरी है? अगर आपको या किसी अपने को नीचे दिए गए गंभीर लक्षण दिखें, तो तुरंत डॉक्टर से मिलें, उल्टी या मल में खून आना। तेज बुखार होना,लगातार इतनी उल्टियां होना कि पेट में पानी भी न टिक पाए। डिहाइड्रेशन या पानी की भारी कमी होना (जैसे पेशाब न आना, भयंकर प्यास लगना, मुंह सूखना या खड़े होने पर चक्कर आना)। नसों से जुड़ी दिक्कतें (जैसे धुंधला या दो-दो दिखना, मांसपेशियों में कमजोरी, झुनझुनी होना, बोलने या निगलने में परेशानी)। अगर दस्त 3 दिनों से ज्यादा समय तक जारी रहें और कोई सुधार न हो।

> गंदी या मिलावटी मिठाई खाने से साल्मोनेला, ई. कोलाई या नोरोवायरस जैसे कीटाणु पेट में जा सकते हैं। इसके लक्षण मिठाई खाने के कुछ घंटों से लेकर कुछ दिनों के भीतर शुरू हो सकते हैं। मरीज को पानी जैसे दस्त, पेट में ऐंठन, जी मिचलाना, बार-बार उल्टी आना, बुखार, बदन दर्द, ठंड लगना और भारी कमजोरी जैसी दिक्कतें होती हैं।










# हवा और पानीके बाद अब बिकेगी धूप



क्या आपने कभी सोचा है कि सूरज ढलने के बाद भी आपको दिन जैसी रोशनी मिल सकती है? कैलिफोर्निया स्थित स्टार्टअप रिफ्लेक्ट ऑर्बिटल कुछ ऐसा ही कर दिखाने की तैयारी में है। कंपनी ने अंतरिक्ष में 50,000 विशालकाय दर्पण (शीशे) भेजने का प्रस्ताव रखा है। कंपनी की योजना रात के अंधेरे में धूप बेचकर कमाई करने की है। स्टार्टअप की योजना के मुताबिक, पृथ्वी की कक्षा में 400 मील ऊपर सैटेलाइट्स पर लगे 50,000 आईनों का एक जाल बिछाया जाएगा। ये आईने रात में सूरज की किरणों को रिफ्लेक्ट कर सौर ऊर्जा फार्मों, शहर की सड़कों या आपातकालीन राहत कार्यों वाले क्षेत्रों में पहुंचाए जाएंगे। कंपनी के सीईओ बेन नोवाक के अनुसार, यह तकनीक सौर ऊर्जा को 24 घंटे उपलब्ध करा सकती है, जिससे जीवाश्म ईंधन की खपत कम होगी। कंपनी अब तक निवेशकों से करीब 235 करोड़ रुपये जुटा चुकी है। हालांकि, रात में धूप मंगाना काफी महंगा सौदा होगा। कंपनी एक शीशे से एक घंटे तक रोशनी देने के लिए 5,000 (करीब 4.2 लाख रुपये) वसूलने की योजना बना रही है। इसके लिए ग्राहक को साल में कम से कम 1,000 घंटे का कॉन्ट्रैक्ट साइन करना होगा। आपातकालीन स्थितियों के लिए यह कीमत और भी अधिक हो सकती है। एक्सपर्ट्स का मानना है कि रात में कृत्रिम रोशनी से इंसानों और जीव-जंतुओं की सर्केडियन रिदम (सोने-जागने का चक्र) बिगड़ सकती है। असमय रोशनी से पक्षियों का प्रवास और पौधों के फूल खिलने का चक्र प्रभावित हो सकता है। अंतरिक्ष वैज्ञानिकों के अनुसार, इतने सारे चमकते सैटेलाइट्स से टेलीस्कोप के जरिए अंतरिक्ष का निरीक्षण करना मुश्किल हो जाएगा। स्टार्टअप ने अमेरिकी नियामक एफसीसी को लाइसेंस के लिए आवेदन दिया है। यदि अनुमति मिलती है, तो इस गर्मी में पहला प्रोटोटाइप सैटेलाइट लॉन्च किया जा सकता है।

## दुनियाके कोने-कोनेमें भारतकी संस्कृति और परंपराओंकी खूबसूरती

भारत की संस्कृति और परंपराओं की खूबसूरती सिर्फ देश तक सीमित नहीं है, बल्कि दुनिया के कोने-कोने में इसकी झलक देखने को मिलती है। विदेशों में रहने वाले भारतीय भी अपनी जड़ों और परंपराओं को पूरे उत्साह के साथ संजोकर रखते हैं।



इसका एक शानदार उदाहरण हाल ही में ब्रिटेन की राजधानी लंदन में देखने को मिला। यहां टेम्स नदी पर मां दुर्गा की भव्य परेड निकाली गई, जिसमें भारतीय संस्कृति, बंगाली परंपरा और भक्ति का अनोखा संगम नजर आया. इस आयोजन की तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से चर्चा बटोर रहे हैं। लंदन में पांचवीं वार्षिक दुर्गा परेड का आयोजन हेरिटेज बंगाल ग्लोबल की ओर से किया गया। इस खास कार्यक्रम में ब्रिटिश बंगाली समुदाय के साथ बड़ी संख्या में प्रवासी भारतीय भी शामिल हुए. परेड का सबसे खास आकर्षण मां दुर्गा की भव्य प्रतिमा रही, जिसे एक विशेष नाव पर सजाकर टेम्स नदी में निकाला गया! इस प्रतिमा को कोलकाता की टेक्नो इंडिया यूनिवर्सिटी के छात्रों ने तैयार किया था। पारंपरिक अंदाज में सजी मां दुर्गा की प्रतिमा ने नदी के किनारे मौजूद लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया। इस परेड का नजारा इसलिए भी खास रहा, क्योंकि मां दुर्गा की प्रतिमा से सजी नाव लंदन के कई मशहूर ऐतिहासिक स्थलों के पास से गुजरी। इनमें बिग बेन, टॉवर ऑफ लंदन और लंदन आई जैसे प्रमुख आकर्षण शामिल थे। एक तरफ लंदन की पहचान मानी जाने वाली ऐतिहासिक इमारतें थीं, तो दूसरी तरफ नाव पर विराजमान मां दुर्गा और उनके जयकारे. यह दृश्य भारतीय संस्कृति और विदेशी शहर की खूबसूरती का अनोखा मेल पेश कर रहा था। कार्यक्रम में बंगाली संस्कृति की भी शानदार झलक देखने को मिली। पारंपरिक ढाक की गूंज और बंगाली नृत्य ने पूरे माहौल को उत्सव के रंग में रंग दिया। सैकड़ों लोगों ने इस आयोजन में हिस्सा लिया और मां दुर्गा के जयकारों से लंदन की फिजाओं को भक्तिमय बना दिया। इस मौके पर बिहार के पर्यटन मंत्री केदार प्रसाद गुप्ता भी विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। उन्होंने आयोजन में शामिल लोगों को शुभकामनाएं दीं और विदेश में भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाने के प्रयास की सराहना की।

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के मुताबिक मंगलवार तड़के करीब 1.00 मुरसु नाम का एक भयंकर चक्रवर्ती तूफान आंध्र प्रदेश के प्रकाशम जिले में ओंगोल के पास तट को पार करना शुरू कर चुका है। बंगाल की खाड़ी के पश्चिम मध्य हिस्से में बना यह चक्रवात राज्य के दक्षिणी तट के करीब पहुंच गया था। जैसे ही इसने तट को पार करना शुरू किया इसके आईवॉल का अगला हिस्सा जमीन के ऊपर आ गया और चक्रवात का केंद्र तट से टकरा गया. यह चक्रवात ओंगोल से लगभग 40 किलोमीटर दक्षिण पूर्व कावली 60 किलोमीटर उत्तर पूर्व और बापटला से 70 किलोमीटर दक्षिण में तट से टकराया. भारत के पूर्वी तटीय राज्य उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु अक्सर चक्रवर्ती तूफानों की चपेट में आते रहते हैं। आईएमडी के आंकड़ों के मुताबिक भारत में हर साल औसतन 2 से 4 ट्रॉपिकल साइक्लोन आते हैं। इनमें से ज्यादातर बंगाल की खाड़ी में बनते हैं और पूर्वी तट से टकराते हैं। भारत को प्रभावित करने वाले लगभग 80त्न चक्रवात बंगाल की खाड़ी में बनते हैं और पूर्वी तट पर जमीन से टकराते हैं. इस वजह से यह इलाका देश का मुख्य चक्रवात जोखिम क्षेत्र बन जाता है। नवंबर 2026 की शुरुआत में मुरसु ने आंध्र प्रदेश और उड़ीसा के तटीय इलाकों में भारी तबाही मचाई थी. इसमें गंभीर बाढ़ और जल भराव जैसी स्थिति पैदा हो गई। उड़ीसा खासतौर से चक्रवातों और आकाशीय बिजली गिरने के खतरे के प्रति संवेदनशील है। खराब मौसम के दौरान इसके तटीय जिलों को काफी ज्यादा तेज हवाओं और भारी बारिश का सामना करना पड़ता है. आंध्र प्रदेश भी एक उच्च जोखिम वाला राज्य है। नेल्लोर, नरसापुर और प्रकाशम जिले सहित इसका दक्षिणी तटीय इलाका संवेदनशील माना जाता है। मुरसु के हालिया प्रभाव से पता चलता है कि इस तटीय क्षेत्र को किस तरह के खतरों का सामना करना पड़ता है। पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु को भी बार-बार ऐसे खतरों का सामना करना पड़ता है. पश्चिम बंगाल के सुंदरबन और उत्तरी तमिलनाडु के तटीय जिले अक्सर चक्रवात के रेड अलर्ट जोन में आते हैं। बंगाल की खाड़ी से लगे तट पर स्थित होने की वजह से यह इलाके अक्सर उन चक्रवातों के रास्ते में आ जाते हैं जो इस खाड़ी में बनते हैं।




यह पूरा मामला महाराष्ट्र के नासिक जिले का है, जहां पन्नालाल नाम के एक 8 साल के गधे की रिहाई का विवाद अब कोर्ट तक पहुंच गया है। इस अनोखे मामले में गधे के असली मालिक (भट परिवार) को अपना हक दिलाने के लिए शिवसेना भी मैदान में उतर आई है। पशु नासिक में आयोजित प्रसिद्ध कालिका माता यात्रा के दौरान पन्नालाल का इस्तेमाल लोगों के मनोरंजन और खेल-तमाशे के लिए किया जा रहा था। वहां पशु कल्याण से जुड़े कार्यकर्ताओं या संस्थाओं ने इसे पशु क्रूरता मानते हुए शिकायत दर्ज कराई। इस शिकायत के बाद प्रशासन ने पन्नालाल को उसके मालिकों से अलग कर दिया और उसे एक गौशाला भेज दिया गया। पन्नालाल के मालिक जमुनाबाई और किशन भट का कहना है कि वे पन्नालाल को तब से पाल रहे हैं जब वह सिर्फ 2 साल का था। वर्तमान में 8 साल का पन्नालाल उनके परिवार के एक सदस्य की तरह है और पिछले 10 दिनों से उससे दूर रहना उनके लिए असहनीय हो गया है। भट परिवार और शिवसेना के पदाधिकारियों ने इस मामले में मानवीय दृष्टिकोण अपनाते हुए पन्नालाल को रिहा करने के लिए नासिक के जिलाधिकारी आयुष प्रसाद से मुलाकात की और ज्ञापन सौंपा। हालांकि, जिलाधिकारी ने स्पष्ट किया कि यह मामला कानूनी पेचीदगियों में फंसा है और इसके लिए अदालत का दरवाजा खटखटाना होगा। जिलाधिकारी ने कोर्ट की प्रक्रिया के लिए कानूनी मार्गदर्शन देने का आश्वासन भी दिया है। गधे का मालिक भट परिवार आर्थिक रूप से कमजोर है और पन्नालाल ही उनके जीवन का एक बड़ा सहारा है। परिवार के इस भावनात्मक जुड़ाव और उनकी असहाय स्थिति को देखते हुए स्थानीय शिवसेना नेताओं (जिनमें उपमहापौर विलास शिंदे, दीपक डोके और अन्य पदाधिकारी शामिल हैं) ने इस लड़ाई में उनका साथ देने का फैसला किया। चूंकि एक आम परिवार के लिए प्रशासनिक और कानूनी लड़ाई अकेले लड़ना मुश्किल होता है, इसलिए शिवसेना के कार्यकर्ताओं ने जिलाधिकारी कार्यालय में पैरवी की। अब पार्टी के सहयोग से भट परिवार कोर्ट में पन्नालाल की रिहाई के लिए याचिका (आवेदन) दायर करने की तैयारी कर रहा है।

# प्रिंस चार्मिंग नहीं, अपनी ज़िंदगी की खुद बनो क्वीन-सुष्मिता सेन



मिस यूनिवर्स बनने से लेकर सिंगल मदर बनने और हर चुनौती का खुलकर सामना करने तक, उनका सफर लाखों लोगों के लिए एक मिसाल है. उनकी बातें सिर्फ प्रेरणा ही नहीं देतीं, बल्कि हमें खुद से प्यार करना और दुनिया की परवाह किए बिना अपनी पहचान बनाना सिखाती हैं. अगर आप भी जिंदगी में किसी चुनौती का सामना कर रहे हैं या थोड़ा सा लो महसूस कर रहे हैं, तो सुष्मिता के ये विचार आपके अंदर एक नई ऊर्जा भर देंगे. हर इंसान खासतौर पर महिला की जिंदगी में ऐसा दौर आता है, जब उसे दूसरों की सोच और उम्मीदों से अलग अपनी पहचान बनाने का फैसला लेना पड़ता है. सुष्मिता सेन की जिंदगी और उनकी कही बातें हमें यही सिखाती हैं कि खुश रहने के लिए किसी प्रिंस चार्मिंग का इंतजार जरूरी नहीं. उनकी ये 10 बातें आपको खुद पर भरोसा करने और अपनी जिंदगी की खुद क्वीन बनने की हिम्मत देंगी. सुष्मिता कहती हैं, मुझे किसी 'प्रिंस चार्मिंग' (राजकुमार) की तलाश कभी नहीं रही, क्योंकि मैं अपनी ज़िंदगी की खुद क्वीन (रानी) हूँ. यह बात सिखाती है कि हमें अपनी खुशी और वजूद के लिए किसी दूसरे पर निर्भर रहने की जरूरत नहीं है.उनका मानना है कि परफेक्ट होने की कोशिश मत करो, असली बनो. दुनिया को आपकी खामियों के साथ आपकी असलियत से प्यार होना चाहिए. मुखौटा पहनने के बजाय अपनी कमियों के साथ खुद को स्वीकार करना ही असली खूबसूरती है.चुनौतियों के बारे में उनका कहना है कि चुनौतियां जिंदगी का हिस्सा हैं. अगर आप उनसे डरकर भागेंगे, तो आप कभी अपनी असली ताकत को नहीं जान पाएंगे. मुश्किलें ही हमें मजबूत बनाती हैं.अपनी शर्तों पर जीना कोई अहंकार नहीं है, यह इस बात का सम्मान है कि आप खुद से कितना प्यार करते हैं. खुद को प्राथमिकता देना स्वार्थी होना नहीं, बल्कि आत्म-सम्मान है.सुष्मिता सलाह देती हैं कि दूसरों को खुश करने में अपनी पूरी जिंदगी मत बिता दीजिए. अंत में, आपको खुद के साथ ही जीना है. इसलिए पहले अपनी खुशी और मानसिक शांति को चुनें.सफलता इस बात से तय नहीं होती कि आपके पास क्या है, बल्कि इससे तय होती है कि आप अंदर से कितने मजबूत हैं. भौतिक चीजें नहीं, आपका आंतरिक आत्मविश्वास आपको सफल बनाता है.खुश रहना दुनिया का सबसे बड़ा बदला है. जब आप अपनी जिंदगी से खुश रहते हैं, तो नकारात्मकता खुद-ब-खुद दूर हो जाती है. अपनी मुस्कान से आलोचकों को जवाब देना सबसे बेहतरीन तरीका है.आपको किसी की मंजूरी की जरूरत नहीं है कि आप कैसे दिखते हैं या क्या करते हैं. आप जैसे हैं, बेहतरीन हैं. खुद पर भरोसा रखें, दुनिया क्या सोचती है इसकी फिक्र छोड़ दें.रिश्ते बोझ नहीं होने चाहिए, वे ऐसे पंख होने चाहिए जो आपको आसमान छूने की आज़ादी दें. एक सच्चा रिश्ता आपको बांधता नहीं, बल्कि आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है. आखिर में वह कहती हैं, गलतियाँ करना गलत नहीं है, गलती से सीख न लेना असली हार है. गिरना और फिर उठकर खड़े होना ही जिंदगी है. और साथ ही, डर का सामना किए बिना आप कभी अपनी असली क्षमता को नहीं जान पाएंगे. हर डर के आगे एक नया मौका छिपा होता है.

# सामान्य पटाखोंसे कितने अलग हैं ग्रीन पटाखे

**यह पारंपरिक पटाखों की तुलना में लगभग ३० प्रतिशत कम वायु प्रदूषण (पीएम) पैदा करते हैं। प्रदूषण में मौजूद बेहद बारीक कण (पीएम२.५ और पीएम१) फेफड़ों के रास्ते सीधे खून में प्रवेश कर जाते हैं। ग्रीन पटाखे हवा में इन बारीक कणों के फैलाव को काफी हद तक कम करते हैं। इसमें पोटैशियम नाइट्रेट और सल्फर का इस्तेमाल नहीं होता, जिससे धुआं बहुत कम निकलता है।**

सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में दिवाली के अवसर पर केवल प्रमाणीकृत ग्रीन पटाखों की बिक्री और इस्तेमाल को सशर्त मंजूरी दी है। हालांकि, यह सवाल भी सबको परेशान कर रहा है कि ग्रीन पटाखे आखिर हैं क्या? अदालत के आदेश के अनुसार, केवल 7 और 8 नवंबर को सीमित समय अंतराल सुबह 6 से 7 बजे और रात 8 से 10 बजे के बीच ही पटाखे चलाने की अनुमति होगी। 9 नवंबर से पूरे दिल्ली-एनसीआर में पटाखों पर पूर्ण प्रतिबंध पुनः लागू हो जाएगा। हालांकि, यह सवाल कई लोग जानना चाह रहे हैं कि आखिर ग्रीन पटाखे क्या हैं, ये पारंपरिक पटाखों से कितने अलग हैं और सुप्रीम कोर्ट का इस पर क्या सख्त रुख है? ग्रीन पटाखे वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर) और राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (एनईईआरआई) की ओर से विकसित किए गए विशेष पटाखे हैं। पर्यावरण सुरक्षा के लिहाज से इनकी कई खूबियां होती हैं... इन्हें कम कच्चे माल और छोटे शैल साइज के साथ बनाया जाता है। इनमें भारी और हानिकारक धातुओं (जैसे बेरियम, सीसा और आर्सेनिक) के इस्तेमाल पर प्रतिबंध होता है। इनमें धूल दबाने वाले एडिटिव्स और कम रासायनिक सामग्री का उपयोग किया जाता है, जिससे हवा में पार्टिकुलेट मैटर (पीएम), सल्फर डाइऑक्साइड और नाइट्रोजन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन काफी घट जाता है। सीएसआईआर-एनईईआरआई के अनुसार, पारंपरिक और ग्रीन पटाखों में सबसे बड़ा अंतर इनके घटकों और प्रदूषण स्तर का है...पारंपरिक पटाखों में भारी धातुओं पर आधारित यौगिकों का इस्तेमाल होता है, जो पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य के लिए बेहद घातक हैं। वहीं ग्रीन पटाखों में जिओलाइट और आयरन ऑक्साइड जैसे एडिटिव्स होते हैं, जो खतरनाक धुएं को नियंत्रित करते हैं। ग्रीन पटाखे पूरी तरह से प्रदूषण-मुक्त तो नहीं होते, लेकिन यह पारंपरिक पटाखों की तुलना में लगभग 30 प्रतिशत कम वायु प्रदूषण (पीएम) पैदा करते हैं। प्रदूषण में मौजूद बेहद बारीक कण (पीएम2.5 और पीएम1) फेफड़ों के रास्ते सीधे खून में प्रवेश कर जाते हैं। ग्रीन पटाखे हवा में इन बारीक कणों के फैलाव को काफी हद तक कम करते हैं। इसमें पोटैशियम नाइट्रेट और सल्फर का इस्तेमाल नहीं होता, जिससे धुआं बहुत कम निकलता है। दिवाली पर प्रदूषण और जनस्वास्थ्य (अनुच्छेद 21) तथा धार्मिक स्वतंत्रता (अनुच्छेद 25) के बीच संतुलन बनाते हुए सुप्रीम कोर्ट ने निम्नलिखित शर्तें और गाइडलाइंस जारी की हैं - 7 और 8 नवंबर को केवल सुबह 6.00 से 7.00 बजे और रात 8.00 से 10:00 बजे के बीच ही ग्रीन पटाखे चलाए जा सकते हैं। 9 नवंबर से फिर से पूर्ण प्रतिबंध लागू हो जाएगा। ऑनलाइन बिक्री पर रोक- फ्लिपकार्ट, अमेज़न आदि जैसे ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म या ऑनलाइन माध्यमों से पटाखों की बिक्री पर सख्त पाबंदी रहेगी। केवल लाइसेंस प्राप्त और निर्धारित स्थलों पर ही प्रमाणित ग्रीन पटाखे बेचे जा सकेंगे। लड़ी और बेरियम वाले पटाखों पर बैन- एक साथ जुड़े हुए पटाखों (लड़ियों) और बेरियम युक्त पटाखों के निर्माण और बिक्री पर पूरी तरह से रोक है। अस्पताल, नर्सिंग होम, वृद्धाश्रम, शैक्षणिक संस्थानों और नोटिफाइड साइलेंस ज़ोन के 300 मीटर के दायरे में पटाखे चलाने पर पूरी पाबंदी रहेगी। क्यूआर कोड वाले असली ग्रीन पटाखों की जांच के लिए पुलिस और प्रशासन को सख्त निगरानी के निर्देश दिए गए हैं। नियमों का उल्लंघन करने वाले व्यापारियों और अधिकारियों पर सीधी अवमानना और जब्ती की कार्रवाई की जाएगी।

